गोतिभा

गोविज्ञान भारती का
संदेशवाहक मासिक

वर्ष : 11 • अंक : 2 | सम्पादक : नरेन्द्र दुबे, डॉ. पुष्पेन्द्र दुबे 20 मई, 2013

अहिंसा

- विनोबा

तुलसी रामायण में एक कहानी आती है। एक बार सुरसा राक्षसी ने हनुमान को निगलने की कोशिश की तो हनुमान ने उससे दुगुना रूप धारण कर लिया। सुरसा ने उससे भी दुगुना रूप धारण किया। होते-होते हनुमान ने सोचा कि इस तरह चलते रहने से कोई अंत नहीं आयेगा। तब अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा। सुरसा बहुत खुश हुई कि हमने हनुमान को निगल लिया और उसकी लीला खत्म हो गयी। लेकिन हनुमान उसके मुंह में से जाकर नाक में से बाहर निकल आए। लघु रूप का अर्थ है अहिंसा।

जितनी कोशिश हो सकती है, उतनी कोशिश करके अहिंसा का लघु रूप गांव में पैदा करने के लिए जुट जायें। देश में अहिंसा की श्रद्धा की परिणति अहिंसा की निष्ठा में कर लें। जब तलवार से लोग लड़ते थे तो हिंसा कम होती थी। लेकिन जो होती थी वह क्षोभ के साथ होती थी। उसमें क्रोध होता था। एक-दूसरे का गला काटने का क्रोध होता है। आज एटम बम से लड़ाई होती है तो क्रोध का सवाल नहीं, आवेश का सवाल नहीं, मनुष्य को देखते ही नहीं, कहीं कोई किसी का चेहरा देखते नहीं, जानते नहीं, सिर्फ दूर से बम डालते हैं। बेलेस्टिक वेपन भी दूर से भेजते हैं। उसमें संहार बहुत ज्यादा होता है, लेकिन फिर भी उसमें क्रोध नहीं होता। उसमें द्वेष नहीं होता और मूर्खता होती है। साइंस के जमाने में गणित करना पड़ता है। गणित के साथ आगे बढ़ों, गणित के साथ पीछे हटो। डर से पीछे नहीं हट सकते, गुस्से से आगे बढ़ नहीं सकते। सब हलचलें नियंत्रित होती हैं। इसका मतलब सेना में भी अहिंसा दाखिल हो चुकी है। यह मैं इसलिए कह रहा हूं कि एटम के युग में जो शस्त्रों का उपयोग हुआ, उसमें संहार तो बहुत हुआ, लेकिन फिर भी वह अहिंसा के नजदीक है। गांधीजी ने कहा था कि आर्गनाइजेशन इज दी टेस्ट ऑफ नानवायलेंस। यानी अहिंसा कभी संगठन नहीं करेगी। लेकिन फिर भी अहिंसा में अच्छा-से-अच्छा आर्गनाइजेशन होगा। हिंसा में आर्गनाइजेशन किया जाता है, अहिंसा में वह किया नहीं जाता। तो भी अधिक से अधिक आर्गनाइजेशन होता है। तभी अहिंसा टिकती है। यह अहिंसा की टेस्ट (कसौटी) है। अहिंसा में किसी प्रकार का आदेश नहीं दिया जाता और फिर भी काम इतना अच्छा चलता है कि आज्ञांकित सेना भी वैसा काम नहीं कर सकती। हमारी संस्थाओं को ऐसी हिम्मत करनी होगी कि व्यक्ति के न मिलने के कारण काम बंद है और इसलिए संस्था डूब गयी यह कहने की हालत न आने दें।

1. आप पर बंधन डाला गया है इसलिए काम ठीक चल रहा है - यह हिंसा है।
2. आप पर किसी प्रकार का बंधन नहीं है, इसलिए स्वैराचार चल रहा है, यह भी हिंसा है।
3. आप पर कोई भी बंधन नहीं है, तो भी सभी काम ठीक चल रहा है, यह अहिंसा है।

शेषामृतम : विचारकणिका : विनोबा साहित्य खण्ड 20

सम्पादकीय

लोकतंत्र में सामंती शब्दावली

भारत देश को आजाद हुए अभी छियासठ साल ही हुए हैं। इसके पहले यह देश किसी न किसी राजा के अधीन रहा है। वह अपने देश के राजा हों अथवा विदेश के। यहां के धर्मग्रंथ राजाओं के चरित्रों से भरे पड़े हैं। इसलिए यहां के जनमानस में राज्य संचालन के लिए राजशाही की अमिट छाप पड़ी हुई है। व्यक्ति से लगाकर समाज और देश बनाने में शब्दों का अप्रतिम योगदान है। हमारे यहां तो शब्द को ब्रह्म की उपाधि दी गई है। शब्द की साधना करने वाले तपस्वियों ने अपने आचरण से शब्दों में असीम शक्ति भर दी है। कथनी और करनी का अंतर मिटने के बाद ही शब्द में शक्ति आती है। उसका असर युगों तक बना रहता है। लेकिन आज मनुष्य का साथ शब्दों ने छोड़ दिया है। आजादी के बाद हमने राजशाही पद्धति को तिलांजलि देकर लोकतंत्र को अपनाया। निश्चित ही यह पद्धति वैज्ञानिक युग के अनुरूप ही है, परंतु हमारे मानस पर आज भी राजशाही ने कब्जा जमा रखा है। तभी तो लोकतंत्र में हमें न सिर्फ सामंती शब्दावली बल्कि सामंतशाही के चित्र और व्यवहार भी दिखाई पड़ रहे हैं। हमारे लोकतंत्र की शुरूआत ही लड़ाई से होती है। चुनाव हमेशा लड़े जाते हैं। अब जहां लड़ाई शब्द प्रयुक्त होगा, वहां भले ही मारकाट न मची हो, लेकिन शब्दों के बाण से एक-दूसरे को घायल करने का मौका कोई नहीं चूकना चाहता। और फिर लड़ाई जीतने के लिए सारे तरीके जायज की श्रेणी में आ जाते हैं। यदि चुनाव लड़ने के बजाय चुनाव खेले जाने लगे तो आज जैसा परिदृश्य चुनाव के दौरान दिखाई देता है, उसमें निश्चित ही बदलाव दिखाई देगा। लोकतंत्र में शब्द चलन में है सत्ता के लिए संघर्ष। यह लोकतंत्र की मूल भावना के ही खिलाफ है। जहां संघर्ष होगा, वहां सेवा भावना कभी दिखाई नहीं देगी। नेता स्वयं को जनता के सेवक कहलाना पसंद करते हैं, परंतु सेवकत्व भाव नदारद रहता है। लोकतंत्र में 'ताजपोशी', 'सिंहासन', 'युवराज', 'राजकुमार', 'कुंवर', 'श्रीमंत', 'राजमाता', 'ठाकुर', 'महारानी', 'प्रजा', जैसे सारे शब्द हमारे रग-रग में भरे सामंती विचारों का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। सार्वजनिक समारोहों और चित्रों में नेताओं को पगड़ी, साफा, मुकुट आदि पहनाने से सामंती विचारों को मजबूती मिलती है। इनसे सेवा का नहीं बल्कि शासक और शासित का भाव ही जाहिर होता है। सामंती शब्दों के चलन में रहते हुए यदि हम नेताओं से जनता की सेवा की अपेक्षा करें तो यह दिवास्वप्न ही है। लोकतंत्र में वंशवाद को पनपाने में इन शब्दों का योगदान कम नहीं है। यदि हम चुनाव पश्चात् सबसे बड़े दल की बजाय 'सबसे बड़े सेवादार' शब्द लिखने लगें तो नेताओं में थोड़ी बहुत सेवा की भावना का संचार हो सकता है। सिक्ख धर्म में यह परंपरा है। चुनाव जीतने के बाद उनमें यही लिखा जाता है कि अमुक वर्षो के लिए इस समूह को गुरु घर की सेवा करने का अवसर मिला है। हम संसद के लिए 'मंदिर' शब्द प्रयुक्त तो करते हैं, परंतु उस मंदिर में क्या होता है, यह किसी से छिपा नहीं है। लोकतंत्र को सामंती शब्दावली से मुक्त कराने की महती जिम्मेदारी मीडिया और साहित्यकारों की है। आज शब्द मनुष्य का साथ छोड़ गए हैं। 'अर्थ' प्रधान युग होने से शब्दों के अर्थ बदल गए हैं। यदि राजनीति का मतलब सिर्फ धोखा देना, छलकपट करना, उठाना, गिराना, पछाड़ना, जलीकटी सुनाना, वैमनस्य बढ़ाना, फूट डालना, तुष्टिकरण, भ्रष्टाचार, अपराध करना और कराना, दोष दर्शन करना, समय आने पर पत्ते खोलना, चालें चलना और वे सब काम करना जिससे व्यक्ति के स्वार्थ की पूर्ति होती हो, तो ऐसे शब्द को तिलांजलि देकर 'लोकनीति' शब्द को अविलंब चलन में लाने की जिम्मेदारी साहित्यकारों की है। क्योंकि साहित्य का मूल कार्य दिलों को जोड़ने का है न कि तोड़ने का। लोकतंत्र की रक्षा के लिए सामंती शब्दों, प्रतीकों, चिह्नों को त्यागे बिना गुजारा नहीं है। हमारे स्वातंत्र्य वीरों की त्याग, तपस्या, बलिदान के अनुरूप देश बनाने के लिए सामंती शब्दावली से मुक्ति जरूरी है।

- डॉ. पुष्पेन्द्र दुबे

इस अंक में ...

- देवनार सत्याग्रह के तीस वर्ष : कुछ प्रश्न–कुछ उत्तर
- कच्छ का अद्‌भुत दर्शन
- प्रेरक कहानियाँ
- स्वास्थ्य समाचार

देवनार सत्याग्रह के तीस वर्ष : कुछ प्रश्न : कुछ उत्तर

- सर्वनारायण दास

गोपीनाथ कविराज का पढ़ रहा था, तो वे 'महायोग' शब्दप्रयोग करते हैं। आज तक की आध्यात्मिक उपलब्धियों का सीमित क्षेत्रों में ही लाभ पहुंचा है। महायोग का अवतरण यानी जिससे पूरा मानव समाज एक साथ लाभान्वित होता हो - पूर्णत: नहीं, तो अत: अवश्य ही। तो जो कि गूढ़ वस्तु है, मैं श्रद्धा से मान लेता हूं। किंतु इसके साथ अपना अनुबंध जरा सोचने को विवश करने वाला है। हम इस अवतार कार्य के लायक कैसे ? हम पर यह जिम्मेवारी क्यो - ऐसी जिम्मेवारी कि अगर हम उसके लायक नहीं बनते, तो मानव समाज का लय होना है। मैं यह व्यक्तिरूपेण नहीं सोच रहा हूं, बल्कि समूहरूपेण - एक प्रेरणा से प्रेरित भावित समूह जिसमें कुछ को तो हम जानते-पहचानते हैं, शेष को अभी देखा नहीं है। इनमें आगतों के अतिरिक्त जो आकर गये और जो आगे अभी आने वाले हैं, ऐसे मित्र-साथी भी हो सकते हैं। तो भी वह ताकत या आत्मविश्वास अपने भीतर महसूस होता नहीं दीखता। तथापि एक आश्वासन बाबा की बात स्वीकारने के पक्ष में है। ईसामसीह का वचन है न! जहां दो या अधिक मेरे नाम से एकत्र हैं, वहां मैं विद्यमान हूं' - where two or more gather in my name, there I am' ऐसे दो-चार मित्र साथ हैं, एक हृदय - मैं शायद ज्यादा बहक चला हूं। लेकिन इसमें शक नहीं कि दैवी शक्ति के कार्य करने के लिए माध्यम, उपकरण बन सकने वाले उपयुक्त व्यक्तियों का एक समूह होना सारी दुनिया में जरूरी है। यह ऐतिहासिक या दैवी जो भी कहें जरूरत है। mother को उद्धृत करूंगा - चाहता तो था कि हिन्दी अनुवाद भी दे दूं, लेकिन अभी वह नहीं कर पा रहा हूं (Something has happened is the world's history which allows us to hope that a selected few in humanity, a small number of beings, perheps, are ready to be transformed in pure gold and that they will be able to manifest strength without violence, heroism without destruction and courage without catastrophe….. and perhaps it would be enough if some individuals became pure gold, for this would be enough to change the course of events,…..we are faced with this necessity in a very urgent way. दूसरी एक जगह वे कहती है I may tell you that by the very fact that you live on the earth at this time, whether you are conscious of it of not, even whether you want it or not you are observing with the air you brethe, this new supramental substance which is now spreding in the earth atmosphere and it is preparing things in you which will manifest very suddenly……और इधर बाबा के शब्द, ''बहुत सारे लोगों के मन क्षुद्र बातों में उलझे रहते हैं। वे इस विचार को कब ग्रहरण करेंगे। ऐसे प्रश्न न उठायें। यह विचार खुद ही उनके सिर में दाखिल होगा। अतिमानस सूर्य है। आम के वृक्ष पर अनेक फल लगे हैं। सूर्य सबको प्रकाश देता है। किंतु उस प्रकाश के प्रभाव से एक-दो आम पक्व होकर अपनी अनुभूति सूचित करते हैं कि पूरे आम उतार लेने चाहिए। उसी प्रकार लोक समाज में जिनकी तैयारी हुई रहती है, उनकी अंतरविभूति पर अतिमानस की प्रकाश किरण केंद्रित होती है और यही चीज और वस्तुस्थिति एक नयी शक्यता को श्रद्धा उत्पन्न करती है। और सचमुच एक श्रद्धा रखने के अलावा अपने पास कोई विकल्प नहीं दीख रहा। मदर के ही शब्दों में ''समस्या है अतिमानस को उस माइंड को समझने की जिसे आधुनिक वैज्ञानिक खोजों के मुताबिक एप ब्रेन से प्रथम ह्यूमन ब्रेन तक विकसित होने में करीब दस लाख साल लगे हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि अतिमानस समाज प्रकट होने में दस लाख साल लगेंगे। मैं पुन: आज के संकट, विकराल स्थिति पर लौटकर आता हूं। दीखता तो यही है कि एक घना अंधकार सब दूर छाया है और अधिकाधिक घना बनकर सबको लीलता चला जा रहा है। लेकिन वचनों पर से यही संदेश मिलता है कि यह सब होना अपरिहार्य है। सबेरा होने से पहले सबसे ज्यादा अंधेरा रहता है। बाबा और श्रीअरविंद की एकवाक्यता -जैसी दीखती है। मेरी समझ से सिर्फ शैली और शब्दों का फर्क है। श्रीअरविंद अतिमानस के अवतरण के आधार से कहते दीखते हैं, तो बाबा विज्ञानयुग का हवाला देते हैं। राजनीति और मजहब, जिन्हें जाना ही है, लेकिन जाने के पहले ये बहुत तकलीफ देने वाले हैं। पुराने मानसशास्त्र, नीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, कोई भी इस विज्ञानयुग में काम के नहीं रहे।' अगर ईश्वर को जगत का

लय करना होगा, जगत कायम रखना हो, तो समाज को अतिमानस का दर्शन होने वाला है, सारे विश्व में एक धर्म की स्थापना होनेवाली है।' श्रीअरविंद और माताजी के अनुसार अतिमानस का पृथ्वी पर अवतरण हो चुका है और वह बहुत तेजी से अपना कार्य कर रहा है। एक शिष्य द्वारा यह पूछे जाने पर कि अतिमानस कार्य कर रहा है, कैसे समझा जाय, तो श्रीअरविंद का उत्तर था कि यह बतलाना संभव नहीं। लेकिन कुछ बाहरी लक्षणों पर से अंदाज किया जा सकता है (1) सारी पृथ्वी पर भूकंप आदि के रूप में विभीषिकाएं अधिक आयेंगी -spiritualisation की तरंगें matter को भी प्रभावित कर रही हैं। (2) मानव समाज में अधिकाधिक तनाव, पागलपन-उन्माद प्रकट होंगे, (3) confusion पहले बढ़ेगा, सारे संतुलन गड़बड़ाएंगे, दूसरी ओर मानवजाति में व्यापक एकता की भावना बढ़ेगी और अधिकाधिक अभिमुख आत्मायें enlightened souls प्रकट होंगी। मैंने माताजी और श्रीअरविंद का आशय लिखा है और मैं मानता हूं कि काफी हद तक मैं आशय को सही ढंग से रख पाया हूं। इस क्रम में आखिरी वाक्य मुझे माताजी का रखना है। The future of the earth depends on a change of consciouness. The only hope for the future is in a change of man's consciouness and the change is bound to come, but it is left to men to decide if they will collabarate for this change or it will have to be enforced upon them by the power of crashing circumstances' और आज तो दुनिया crashing circumstances की ओर ही बढ़ती हमें नजर आती है। यह सारा परिदृश्य देखते हुए, उसका ख्याल कर मुझे लग रहा है कि अपन लोगों के लिए stand and wait करना यही एकमात्र विकल्प प्राप्त है। समुद्र में जा रहे किसी जहाज पर कोई काग आ बैठा हो। वह उड़-उड़कर बाहर जाता है, लेकिन समुद्र से कहीं कोई किनारा नजर नहीं आता। फिर लौटकर जहाज के मस्तूल पर आ बैठता है।' जैसे काग जहाज पर सूझत और न ठौर' यही अपनी हालत दीखती है। यह जो stand करना और wait करना है, वह धीरज और हमारी आस्था की घोर कसौटी है। देवनार सत्याग्रह stand and wait करने का एक प्रकार हो सकता है। दूसरे साथियों, मित्रों के लिए दूसरे प्रकार होंगे। मुख्य बात तो अविचलित, निष्कंप रहने की है। लेकिन वह तो आज दूर की बात है। अपने संबंध में अधिक से अधिक इतना ही कहा जा सकता है कि लड़खड़ाते पांवों से ही सही, stand करने की कोशिश कर रहे हैं। ये सारी बातें मेरे दिमाग की तरंगें brain waves हो सकती हैं। ऐसा होना सर्वथा संभव है, तथापि एक प्रश्न पीछे लगा ही रहता है। प्रष्न यह कि अगर गोहत्याबंदी हो गयी रहती तो.....? फिर वो देवनार सत्याग्रह उज्जवल रूप लेकर चल रहा होता.....? दोनों हालतों में विनोबा कायम ही रह जाता, कीर्ति भी बनी रह जाती। और इधर बाबा तो अपने आपको, अपनी कीर्ति को मिटा ही डालना चाहते थे। वह बात तब नहीं हो पाती। कीर्ति को पहले अपकीर्ति से धोने का काम किया। लेकिन कीर्ति व अपकीर्ति, दोनों में किसी के रह जाने से विनोबा बच ही जाता था। इसलिए खुद को ही मिटा डाला। तथापि फिर जो विनोबा मिट नहीं पाया वही अपना नसीब है। नसीब यानी destiny (नियति), नसीब यानी destination (गंतव्य, मुकाम)।

चार-पांच दिनों में यह पत्र आज 13.12 को पूरा हो पाया है। पत्र इतना लम्बा हो गया है कि पढ़ने वाला थक ही जाए। लेकिन एक बार जी की बात मित्रों के बीच रख ही देनी थी, इस कारण पत्र के लम्बा हो जाने का मुझे पछतावा नहीं हो रहा है। बाकी तो 'शून्यमद: शून्यमिदं! इति सर्वनारायणदास - क्रमशः

विचार कणिका

आज हमारे सामने तीन वाद उपस्थित है, पहला वाद है सेनावाद दूसरा वाद है राज्यवाद। इस वाद के अन्तर्गत सत्ता, राज्य और टैक्स इन तीनों का समावेश होता है। तीसरा वाद है पूँजीवाद, इन वादों के साथ मेरी इन तीन बातों को जोड़िए।

पूँजीवाद का पूरक : ग्रामाभिमुख खादी

सेना का पूरक : शान्ति सेना

राज्य का पूरक : ग्रामदान

जो पँचायते मेजरिटी से काम करने वाली होगी उनमें राजनीति पार्टियों का दखल होगा, जो लोग उसमें जाएंगे उनके हाथ में सत्ता आएगी और उनके द्वारा ग्रामों का सुव्यवस्थित शोषण होगा। मैंने उनको नाम दिया था विकेन्द्रित शोषण योजना। और केन्द्रित करने पर शोषण योजना इफेक्टिव हो सकती है तो पँचायत यानि इफिशियंट, इफेक्टिव, डीसेन्ट्रालाइज्ड एस्कप्लाइटेशन (कुशल, कारगर, विकेन्द्रित शोषण योजना)।

कच्छ का अद्भुत दर्शन

- अमृतलाल डोशी

जीवन के लंबे सफर में सारे भारत और प्रदेश भ्रमण का सौभाग्य मिला। लेकिन इसमें एक कमी थी कच्छदर्शन की। कई सालों बाद यह हार्दिक इच्छा पूरी करने का अवसर प्राप्त हुआ। गोविज्ञान भारती के पूर्व प्रमुख आदरणीय श्री कांतिसेन श्रॉफ (काकाजी) का कच्छ के भुजड़ी में निवास है। भुजड़ी, भुज से 5 किलोमीटर दूर है। वे मुंबई छोड़कर हर शीत ऋतु में दो-तीन महीने के लिए भुजड़ी में रहते हैं। गोरक्षा-गोसेवा के बारे में दो बार उनसे मिलना हुआ। तब काकाजी ने सुझाव रखा कि इस विषय में गहन चिंतन की जरूरत है और आप गोप्रेमी लोग कच्छ में पांच दिन आकर इसकी गहन चर्चाकर अगला कार्यम बनाएं।

कार्यवाही : प्रस्ताव को सर्वसम्मति से स्वीकार कर सर्वश्री रसेंदु शुक्ला, किशोर शाह और मैं स्वयं 19 मार्च की सुबह भुज-भुजड़ी पहुंचे। चिंतन के प्रथम सत्र में काकाजी ने गो साहित्य का अच्छी तरह से अवलोकन करके संतोष प्रकट किया। क्योंकि कार्य की शुरुआत में knowledge base data-bank की अत्यंत आवश्यक होता है। दोपहर की बैठक में भुज के युवा उत्साही वैद्य श्री निपुन बुच से मुलाकात हुई। स्पष्ट वक्ता की हैसियत से उन्होंने बताया कि आज के वैज्ञानिक माहौल में आयुर्वेद को भी वैज्ञानिक कसौटी पर कसना जरूरी है। प्राचीन आयुर्वेद में अनेक सिद्धांत और सिद्धि हैं, लेकिन इसको सिद्ध करके प्रमाणित करना होगा। दोनों चिकित्सा पद्धतियों का अच्छा सम्मिश्रण हो सकता है। उन्होंने इस कार्य में पूरा समय देने का आश्वासन दिया। यह विचार भी किया गया कि गोवंश सिर्फ कानून से ही नहीं बचेगा। किंतु उसकी उपयोगिता वैज्ञानिक तरीके से सिद्ध होना जरूरी है। दूसरे दिन 20 मार्च को लुणी के वर्धमान जीवदया केंद्र की गोशाला और गोचिकित्सा की दवाओं, प्रशिक्षण केंद्र और वहां के ट्रस्टी, कच्छ पांजरापोल गोशाला संगति के प्रमुख श्री वसनजी भाई सोनी से मुलाकात हुई। केंद्र की व्यवस्था और गोरक्षा की चर्चा हुई। इस साल कम वर्षा होने के कारण कच्छ के कई उत्तर पश्चिम क्षेत्रों में अकाल की स्थिति है। इस पर सरकार से मदद की बातचीत चल रही है। इस संस्था ने कई सरकारी ईनाम प्राप्त किए हैं। मुलाकात के दौरान अनेक सुधार कार्यो की जानकारी दी गई। दोपहर को सात्विक भोजन किया गया। दोपहर में भुज के उत्साही गोसेवक श्री मनोज भाई सोलंकी से लाभदायक चर्चा हुई। वे गोचिकित्सा को वैज्ञानिक तरीके से सिद्ध करने का पूर्ण प्रयत्न कर रहे हैं। रोगियों के अच्छे होने का प्रमाण पत्र एकत्र करते हैं। उन्होंने पूरे सहयोग का वचन दिया है। तीसरे दिन 21 मार्च को 85 एकड़ में फैले अष्टकोण आकार में बने तलवाणा-मांडवी स्थित ट्रस्ट द्वारा संचालित प्रख्यात जैन मंदिर 72 जिनालय मंदिर और गोशाला का दर्शन किया। पवित्र, विशाल, भव्य, स्वच्छ, सुदृढ़ जैन मंदिर में व्यवस्थापक श्री रतीभाई से बात हुई। इस मंदिर के परिसर में भारतभर के सभी प्रसिद्ध जैन मंदिरों का इतिहास, फोटोग्राफ और इसमें विराजमान तीर्थंकर मूर्ति की रंगीन छवि देखकर ऐसा लगा कि हमें यहां सभी तीर्थो की पावन यात्रा का लाभ मिल गया। यहां देशी कांकरेज गोवंश को अच्छी तरह से रखा गया है। बड़ा शेड, चरने के लिए गोचर जमीन उपलब्ध है। लेकिन जल व्यवस्था और चारे के बारे में सुधार की जरूरत है। उस पर अमल करने का विश्वास दिया। गोमूत्र, गोबर का उपयोग नहीं हो रहा है। इसका महत्व बताया गया, जिससे गोशाला चलाने में सुविधा हो सकती है। इसके लिए मुंबई में रहने वाले ट्रस्टी श्री मोरारजी भाई से संपर्क करेंगे। यहां आधुनिक व्यवस्था सहित धर्मशाला और भोजनालय है। आयुर्वेदिक औषधालय में विविध प्रकार के पेड़ लगाए गए हैं। यहां से थोड़ी दूर मांडवी में श्री विवेकानंद अनुसंधान और ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट देखने के लिए गए। सर्वप्रथम यहां रक्तमणी नदी एवं जल व्यवस्था प्रकल्प जिसमें वर्षा के पानी का संग्रह करने की फिल्म देखी। इससे जल, जमीन, जंगल और जानवर की रक्षा और वृद्धि होती है। जमीन से जल का स्तर ऊपर आया है। 114 गांव के 22000 लोगों को लाभ प्राप्त हुआ है। बाद में गोशाला देखने से पता चला कि अधिक दूध के लिए यहां संकर गायों को रख गया है। लेकिन यह प्रयोग नुकसानकारक ही साबित हुआ है। यह अपने देश के हित में नहीं है। यहां शिक्षण का प्रबंध है। कई प्रकार के शिविरों का आयोजन भी होता है। हम जब यहां गये तब 3 दिन का गांव के किसानों के लिए बाजरा शिविर चल रहा था । इसमें हमने भी भाग लिया। इससे सभी को प्रसन्नता हुई। इस संस्था को अच्छे काम के लिए कई ईनाम प्राप्त हुए हैं। लौटने में हमें बणदीया नगर में देश की सभी बैंक की शाखा दिखाई पड़ी। देश परेदश से वतन के लिए लोग यहां पैसा भेजते हैं। 22 मार्च को हमें चार दिन पूरे हुए। भुज से थोडी दूर माघापुर में श्री रामकृष्ण ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री गोकृषि संशोधन विस्तार केंद्र, कुकमा में श्री मनोज भाई सोलंकी से मुलाकात हुई। कार्यालय को अनोखी पद्धति से ग्राम्य संस्कृति और घास से बनाया गया है। गाय-

बैल की पूर्ण कद की प्रतिमा असल गाय-बैल जैसी लगती है। यहां गो साहित्य का बड़ा संग्रह है। यहां गो आधारित दवाओं की बिक्री तथा उपचार किया जाता है। सभी रोगियों का रिकार्ड रखा जाता है। अत्यंत पारदर्शक और वैज्ञानिक तरीके से सभी कार्य करते हैं। उनका उत्साह और पुरुषार्थ काबिले तारीफ है। पांचवे और आखिरी दिन 23 मार्च को गोचिंतन का सार और आगे का कार्यक्रम तय किया गया। सांझ को भुजदर्शन के लिए गए। प्रथम भुज दर्शन में, स्वामी नारायण जी का विशाल मंदिर, पुरानी ऐतिहासिक चीजों का संग्रहालय देखा। यहां कच्छ की ग्राम जनता का हुनर और भरत काम इत्यादि का अलभ्य नमूना, कच्छ की जनजाति का पूर्ण कद का मॉडल देखने का सौभाग्य मिला। यहां कच्छ के राजा का राज महल, यहां रखी राजशाही की ऐतिहासिक चीजें, वस्तुओं का खजाना, विराट पांच मंजिल घड़ियाल का टॉवर अद्‌भुत लगा। हीम सागर तालाब के पास बाजार में कच्छ की कारीगरी, भरतकाम, वस्त्र उद्योग देखा। बांधणी की खरीदी की। कला और संस्कृति को जीवनदान देने में 'सृजन' का श्रेष्ठ योगदान है। कई सालों से ग्राम महिलाओं का संपर्क करके उनके कौशल को बढ़ावा देकर आधुनिक तरीके से देश के सामने प्रकट करने का अनोखा श्रेय सृजन और उनकी प्रायोजक श्रीमती के.सी.श्रॉफ की धर्मपत्नी चंदाबेन को जाता है। उनके इस कार्य के लिए उन्हें परदेश का प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसकी बड़ी रकम से अभी एक बड़ा जीवंत म्युजियम 9 एकड़ में 85000 चौड़ाई फुट में आकार ले रहा है, जो अगली फरवरी 2014 तक पूर्ण हो जाएगा। पूरे गुजरात में यह अपनी तरह का जीवंत संग्रहालय होगा। कच्छ के इस अद्‌भुत दृश्य को हमने अपनी आंखों में बसा लिया। सिनेमा के अभिनय सम्राट श्री अमिताभ बच्चन ने कच्छ के बारे में जो कहा है कि, 'कच्छ नहीं देखा, तो कुछ नहीं देखा' सत्य है।

कच्छ दर्शन में यहां के स्वादिष्ट व्यंजनों का उल्लेख करना जरूरी है। मांडवी के पेंड़ा, खाजली, विशेष प्रकार की मसाला डबल रोटी जो 'दाबेली' के नाम से प्रख्यात है, इसका स्वाद अभी तक है। देशी गाय के उत्पाद से बनी चीजों, दूध उपरांत छाछ, दही, घी की मिठाई हमेशा याद रहेगी। इस पांच दिवसीय यात्रा का मुख्य उद्‌देश्य देशी गोवंश को कत्लखाने से बचाना था। साथ ही गोवंश को कुपोषण से मुक्त करने पर भी विचार किया गया। इस चर्चा में दो विषयों पर ध्यान केंद्रित किया गया। देशभर में घरेलु ईंधन के रूप में प्रयुक्त की जाने वाली कुकिंग गैस की कीमत दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इस समस्या को गोबर गैस से हल किया जा सकता है। अगर गोबर गैस का वितरण सिलेंडर स्वरूप में या और कोई तरीके से बैलून करने की व्यवस्था की जाय तो ईंधन आसानी से प्राप्त हो सकता है। गोवंश को बचाने के लिए कानूनी तरीके अलावा उसकी रचनात्मक उपयोगिता वर्तमान समय में सिद्ध करना होगी। गाय के दूध उपरांत गोमूत्र से दवा, गोबर खाद, रांधण गैस, बिजली उत्पादन, वाहन और अन्य क्षेत्र में बैल शक्ति का उपयोग, पानी खींचना, आटा चक्की चलाना, बिजली उत्पादन, चारा काटने की मशीन इत्यादि में उपयोग हो सकता है। इसमें से गोआधारित दवाओं का बड़ी मात्रा में उत्पादन हो रहा है, इसकी विश्वसनीयता न होने के कारण वह सिद्ध नहीं है। एलोपेथिक दवा के माफिक इसकी पूछ-परख नहीं है। वैज्ञानिक तरीके से इसका उत्पादन करना जरूरी है। जिससे यह संस्थापित हो सके। काफी चिंतन के बाद यह तय किया गया कि इस क्षेत्र में कार्य की शुरुआत की जाए। आजकल गो आधारित दवा के उपयोग से कई रोगियों का रोग मिटा है। इन सब रोगों की केस हिस्ट्री एकत्र करके इसका वैज्ञानिक तरीके से एनालिसिस कियास जाए। इसके लिए एक व्यवस्थित परिपत्र, जिसमें रोगी की संपूर्ण विगत का विवरण हो बनाया जाए। देश की अनेक संस्था और इस संबंधित विषय के गोप्रेमी, निष्णातों का सहयोग लेकर कार्य आगे बढ़ाया जाए। गोआधारित दवाओं के वैज्ञानिक तरीके से संस्थापित होने से इसका बड़ा प्रचार, बिक्री होने से गोवंश की उपयोगिता सिद्ध होने से गाय जरूर बचेगी। हमारा सौभाग्य है कि इस कार्य में हमें आदरणीय कांतिसेन श्रॉफ, डॉ.श्री अशोक वैद्य, श्री जयसुख भाई भूता, श्री वसनजी भाई सोनी, श्री मनोज सोलंकी, वैद्य श्री निपुन बुच, डॉ.शारदा प्रसाद मिश्रा, डॉ.छोटेलाल शाह इत्यादि अनेक गोप्रेमी गोसेवकों का सहयोग और मार्गदर्शन मिलता रहा है। यह जानकर खुशी होगी कि कच्छ में कार्य का शुभारंभ हो गया है। पांच दिवसीय चिंतन यात्रा का आखिरी मंतव्य गुजराती की एक प्रख्यात कहावत के बिना पूर्ण नहीं हो सकता : शियाणे सारेठ भलो, ऊनाणे गुजरात

वर्षअे वात्रड़ भलो, कच्छड़ो बारे मास

चिरस्मरणीय घटना : पांचवे दिन रात्रि को विदाई के समय देर होने के कारण काका सृजन से हमारे निवास स्थान आए और सबको विदाई देते हुए आलिंगन भरके अपनी आत्मीय संवेदना प्रकट की। इस घटना ने हमें इतना प्रभावित किया कि उसका उल्लेख किए बिना नहीं रह सकते। साथ-साथ यह भी उल्लेख करना आवश्यक है कि भुजड़ी में सृजन संस्था में रहना, भोजन और वाहन की व्यवस्था और सेवा के लिए वहां के कर्मचारी बंधुओं का हम अत्यंत आभार प्रकट करते हैं। भारतीय गोवंश की सुरक्षा, संवर्धन, गोसेवा इत्यादि साथ में हम सब समर्पित हो, इसी अभ्यर्थना के साथ।

प्रेरक कहानियाँ

पत्थर और घी

सदियों पहले किसी पंथ के पुरोहित नागरिकों के मृत संबंधी की आत्मा को स्वर्ग भेजने के लिए एक कर्मकांड करते थे और उसके लिए बड़ी दक्षिणा माँगते थे उक्त कर्मकांड के दौरान वे मंत्रोच्चार करते समय मिट्टी के एक छोटे कलश में पत्थर भरकर उसे एक छोटी सी हथौड़ी से ठोंकते थे यदि वह पात्र टूट जाता और पत्थर बिखर जाते तो वे कहते कि मृत व्यक्ति की आत्मा सीधे स्वर्ग को प्रस्थान कर गयी है अधिकतर मामलों में मिट्टी के साधारण पात्र लोहे की हथौड़ी की हल्की चोट भी नहीं सह पाते थे और पुरोहितों को वांछनीय दक्षिणा मिल जाती थी।

अपने पिता की मृत्यु से दुखी एक युवक बुद्ध के पास इस आशा से गया कि बुद्ध की शिक्षाएं और धर्म अधिक गहन हैं और वे उसके पिता की आत्मा को मुक्त कराने के लिए कोई महत्वपूर्ण क्रिया अवश्य करेंगे बुद्ध ने युवक की बात सुनकर उससे दो अस्थिकलश लाने के लिए और उनमें से एक में घी और दूसरे में पत्थर भरकर लाने के लिए कहा -

यह सुनकर युवक बहुत प्रसन्न हो गया उसे लगा कि बुद्ध कोई नयी और शक्तिशाली क्रिया करके दिखाएँगे वह मिट्टी के एक कलश में घी और दूसरे में पत्थर भरकर ले आया बुद्ध ने उससे कहा कि वह दोनों कलश को सावधानी से नदी में इस प्रकार रख दे कि वे पानी में मुहाने तक डूब जाएँ फिर बुद्ध ने युवक से कहा कि वह पुरोहितों के मन्त्र पढ़ते हुए दोनों कलश को पानी के भीतर हथौड़ी से ठोंक दे और वापस आकर सारा वृत्तांत सुनाये-

उपरोक्त क्रिया करने के बाद युवक अत्यंत उत्साह में था उसे लग रहा था कि उसने पुरानी क्रिया से भी अधिक महत्वपूर्ण और शक्तिशाली क्रिया स्वयं की है बुद्ध के पास लौटकर उसने सारा विवरण कह सुनाया दोनों कलश को पानी के भीतर ठोंकने पर वे टूट गए उनके भीतर स्थित पत्थर तो पानी में डूब गए लेकिन घी ऊपर आ गया और नदी में दूर तक बह गया।

बुद्ध ने कहा- अब तुम जाकर अपने पुरोहितों से कहो कि वे प्रार्थना करें कि पत्थर पानी के ऊपर आकर तैरने लगें और घी पानी के भीतर डूब जाए।

यह सुनकर युवक चकित रह गया और बुद्ध से बोला आप कैसी बात करते हैं! पुरोहित कितनी ही प्रार्थना क्यों न कर लें पर पत्थर पानी पर कभी नहीं तैरेंगे और घी पानी में कभी नहीं डूबेगा!

बुद्ध ने कहा तुमने सही कहा तुम्हारे पिता के साथ भी ऐसा ही होगा यदि उन्होंने अपने जीवन में शुभ और सत्कर्म किये होंगे तो उनकी आत्मा स्वर्ग को प्राप्त होगी यदि उन्होंने त्याज्य और स्वार्थपूर्ण कर्म किये होंगे तो उनकी आत्मा नर्क को जायेगीण् सृष्टि में ऐसा कोई भी पुरोहित या कर्मकांड नहीं है जो तुम्हारे पिता के कर्मफलों में तिल भर का भी हेरफेर कर सके।

सिकंदर का अहंकार

सिकंदर ने ईरान के राजा दारा को पराजित कर दिया और विश्वविजेता कहलाने लगा। विजय के उपरांत उसने बहुत भव्य जुलूस निकाला। मीलों दूर तक उसके राज्य के निवासी उसके स्वागत में सर झुकाकर उसका अभिवादन करने के लिए खड़े हुए थे। सिकंदर की ओर देखने का साहस किसी में नहीं था।

मार्ग के दूसरी ओर से सिकंदर ने कुछ फकीरों को सामने से आते हुए देखा। सिकंदर को लगा कि वे फकीर भी रूककर उसका अभिवादन करेंगे। लेकिन किसी भी फकीर ने तो सिकंदर की तरफ देखा तक नहीं।

अपनी ऐसी अवमानना से सिकंदर क्रोधित हो गया। उसने अपने सैनिकों से उन फकीरों को पकड़ कर लाने के लिए कहा। सिकंदर ने फकीरों से पूछा तुम लोग नहीं जानते कि मैं विश्वविजेता सिकंदर हूँ ? मेरा अपमान करने का दुस्साहस तुमने कैसे किया ?

उन फकीरों में एक वृद्ध महात्मा भी था। वह बोला, किस मिथ्या वैभव पर तुम इतना अभिमान कर रहे हो, सिकंदर ? हमारे लिए तो तुम एक साधारण आदमी ही हो।

यह सुनकर सिकंदर का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। महात्मा ने पुनः कहा, तुम उस तृष्णा के वश में होकर यहाँ-वहां मारे-मारे फिर रहे हो जिसे हम वस्त्रों की तरह त्याग चुके हैं। जो अंहकार तुम्हारे सर पर सवार है वह हमारे चरणों का गुलाम है। हमारे गुलाम का भी गुलाम होकर तुम हमारी बराबरी की बात कैसे करते हो ? हमारे आगे तुम्हारी कैसी प्रभुता ?

सिकंदर का अंहकार मोम की तरह पिघल गया। उस महात्मा के बोल उसे शूल की तरह चुभ गए। उसे अपनी तुच्छता का बोध हो गया। उन फकीरों की प्रभुता के आगे उसका समस्त वैभव फीका था। उसने उन सभी को आदर सहित रिहा कर दिया।

रजि. MPHIN/2003/11246 Postal Reg. ICD. (MP) 1106/2012-14

गोविभा 20 मई, 2013

स्वास्थ्य समाचार

गाँधीजी की पोती तारा बहन गाँधी के साथ

सर्वोदय सेवक श्री नरेंद्र दुबे स्वस्थ एवं प्रसन्न हैं। नित्य-नैमित्तिक कर्मो को वे सुचारू रूप से कर रहे हैं। धर्मपत्नी पुष्पा दुबे परछाई के समान उनकी बिना थके दिन-रात सेवा कर रही हैं। श्री दुबेजी जीवनभर प्रवासी रहे हैं। उनका प्रवासी मन जब कभी बेचैन हो जाता है, तब पुष्पा बहन उन्हें ऑटो रिक्शा अथवा टैक्सी में बैठाकर परिचितों के यहां मिलाने ले जाती हैं। पहले वे अपने ससुराल छठे-चौमासे ही जाते थे, परंतु अब वे ससुराल जाने का पूरा लुत्फ उठा रह हैं। बीच में भोपाल जाना भी हुआ। अभी वे इन्दौर में ही हैं। देशभर में फैले विशाल सर्वोदय परिवार की शुभकामनाएं उनके साथ हैं। उनकी वाणी खुलने की सभी को प्रतीक्षा है। ईश्वर इस शुभेच्छा को पूर्ण करेगा।

अपील

प्रिय मित्रों,

किसी भी वैचारिक मासिक पत्रिका का निरंतर 10 वर्षों तक प्रकाशित होते रहना गौरवपूर्ण उपलब्धि से कम नहीं है। यह आप सभी की सहभागिता और मार्गदर्शन से ही संभव हो पाया है। समाज में व्याप्त वैचारिक शून्यता की पूर्ति में **गोविभा** पत्रिका कहाँ तक सफल हुई यह तो सुधी पाठक ही बता पाएंगे। नए वर्ष में प्रवेश करते हुए गोविभा परिवार से यह अपील है कि वे इसके आजीवन सदस्य बनें। गोविभा पत्रिका की आजीवन सदस्यता राशि रु. 1,000 है। सहयोग राशि 50 रु है। सुधी पाठक **गोविज्ञान भारती** के नाम का ड्राफ्ट बनाकर डी-37, सुदामानगर, इन्दौर के पते पर भेज सकते हैं। आजीवन सदस्यता हेतु संपर्क करें- 097542-20781

संपादक

प्रेरक-कथा-

आनंद

इस साल मैंने अपने जीवन का पूरी तरह से आनंद लिया, शिष्य ने गुरु से कहा.

अच्छा?, गुरु ने पूछा, क्या-क्या किया तुमने?

सबसे पहले मैंने गोताखोरी सीखी, शिष्य ने कहा, फिर मैं दुर्गम पर्वतों पर विजय पाने के लिए निकला. मैंने रेगिस्तान में भी दिन बिताये. मैंने पैराग्लाइडिंग की, और आप यकीन नहीं करेंगे, मैंने

गुरु ने हाथ हिलाकर शिष्य को टोकते हुए कहा, ठीक है, ठीक है, लेकिन यह सब करने के दौरान तुम्हें जीवन का आनंद उठाने का समय कब मिला?

प्रकाशक :
नरेन्द्र दुबे, कार्याध्यक्ष, गोविज्ञान भारती
द्वारा मुंबई सर्वोदय मण्डल, 299, ताड़देव रोड, नानाचौक
मुंबई-400 007, फोन : (022) 23872061

डी-37, सुदामा नगर, इन्दौर-452 009
फोन : 0731-2489475, मो.: 97542 20781
www.govigyan.org ● e-mail : vinobaji1@gmail.com
prof.pushpendra@gmail.com

मुद्रण : श्रीकृति ग्राफिक्स, बी-133, सुदामानगर, इन्दौर
मो.: 98269 51703

आजीवन शुल्क : 1,000 ● वार्षिक शुल्क : रु. 50 ● एक प्रति : रु. 5

गोविभा

रजि. MPHIN/2003/11246
पोस्टल रजि.आई.सी.डी. (एम.पी.) 1106/12-14

सेवा में,

_____

_____